शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनसंचार के माध्यम से ग्रामीण जीवन स्तर के बदलते आयाम

सतीश जायसवाल (शोधार्थी)
डॉ.सचिन शर्मा'
प्राचार्य
संस्कार कालेज आफ प्रोफेशनल स्टडीज
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जनसंचार सुविधाओं के माध्यम से तात्पर्य समाचारपत्र , टेलीविजन, रेडियो, विज्ञापन, कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, टेलिफोन इत्यादि से है। भारतीय विकास की आधारशिला गाँव ही है। भारत के सम्पूर्ण आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक विकास में ग्रामीण जीवन के विकास का महत्वपूर्ण स्थान होता है।2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 68.84 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जनसंचार व्यवस्था के प्रभाव से ग्रामीणों की परम्परागत जाति संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे है। जनसंचार के माध्यम से गाँवों के अधिक उत्साही तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों में नेतृत्व की नई क्षमताओं का विकास हो रहा है।

मुख्य बिंदु :- जनसंचार, ग्रामीण जीवन, स्तर, माध्यम, विकास।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में जनसंचार काफी प्रचलित शब्द है, इसका निर्माण दो शब्दों जन और संचार से मिलकर हुआ है। जनसंचार शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 19वीं सदी के तीसरे दशक के अंतिम दौर में संदेश सम्प्रेषण के लिए किया गया। जनसंचार को अंग्रेजी में मास-कम्यूनिकेशन कहते है। भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और सूचना क्रांति का मुख्य केन्द्र बिन्दु बन चुका है। इसीलिए ग्रामीण जीवन व आर्थिक विकास में जनसंचार की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए ग्रामीण जीवन के विकास में जनसंचार के भविष्य पर अध्ययन करना आवश्यक है। सूचना प्राद्यौगिकी के युग को प्राथमिकता देने का कार्य जनसंचार ही कर रहा है। भारत मूलतः ग्रामीण व कृषि प्रधान देश है। देश का अधिकांश भाग गाँव में निवास करता है। ग्रामीण जनसंख्या के जीवनयापन के लिए पर्याप्त मात्रा में सूचना प्रौद्योगिकी की व्यवस्था के रूप में जनसंचार के माध्यम से सूचनाएँ प्रदान की जा रही हैं, ताकि वह आधुनिक युग के साधनों का प्रयोग करके अपने जीवन का विकास कर सके।

आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन में ही जीवित है। देश का जीवन ग्रामीणों द्वारा ही पोषित हो रहा है। देश के विकास में ग्रामीण जीवन की उन्नति को अनदेखी करना एक गंभीर भूल होगी इसीलिए प्रतिवर्ष सरकार नई-नई योजनाओं की घोषणा करती है। साथ ही राज्य सरकारें भी ग्रामीण क्षेत्रों की हालत सुधारने के लिए आकर्षक योजनाओं का निर्माण कर उसे लागू कर रही हैं। उसमें से जनसंचार की सुविधा भी एक है। ग्रामीण जीवन के विकास का अर्थ लोगों को होने वाले आर्थिक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लाभों के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक व सम्पूर्ण ढाँचे की बेहतर स्थिति में होना है। जब ग्रामीण जीवन की विकास प्रक्रिया में लोगों की अधिकाधिक सहभागिता निश्चित हो जाए, विकास योजनाओं का विकेन्द्रीकरण किया जाये , ताकि ग्रामीण जीवन की सामाजिक , आर्थिक स्थिति मजबूत हो। स्वतंत्रता के बाद से ग्रामीण जनता का जीवन स्तर सुधारने के लिए ठोस प्रयास किये गए हैं। ग्रामीण विकास की एकीकृत पहल रही है और सभी पंचवर्षीय योजनाओं में गरीबी उन्मूलन की चिंता रही है। इसलिए ग्रामीण जीवन का विकास हमारी योजना प्रक्रिया का एक प्राथमिक विषय रहा है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जनसंचार के माध्यम से ग्रामीण जीवन स्तर के बदलते आयाम का अध्ययन करना है। इस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु कुछ सहायक उद्देश्य निम्न हैं -

1. ग्रामीण जीवन में जनसंचार सेवाओं की वर्तमान स्थिति व महत्व का अध्ययन करना है।
2. जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

जनसंचार के माध्यम से ग्रामीणों के जीवनस्तर में वृद्धि हुई है।

शोध प्रविधि

शोध अध्ययन के अंतर्गत मैंने द्वितीयक संमकों का प्रयोग किया है। इन संमकों के स्रोत के रूप में पाठ्य पुस्तकों, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन, शोध पत्र, समाचार पत्र-पत्रिका और वेबसाईट्स इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

जनसंचार के माध्यम से बदल ता ग्रामीण जीवन

ग्रामीण जीवन की बदलती रूचियों , परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी तथा पारम्परिक और मनोरंजन आदि नवीन रूप धारण कर रहा है। जनसंचार की प्रकृति आज सर्वथा बदल गई है क्योंकि आज ग्रामीण जीवन व्यतीत करने वाले लोगों की अधिकाधिक तथा नवीनतम सुविधाओं की मांग कर रहा है। ऐसा कर पाना जनसंचार की वजह से संभव हुआ है। आने वाले समय में जनसंचार रूपों का ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में कहीं बड़ी भूमिका होगी। सरकार भी अपनी तरफ से योजना व सक्रियता के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंचार की सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रेडियो आज भी सर्वाधिक सस्ता सुगम और लोकप्रिय जनसंचार का साधन है। देश में रेडियो प्रसारण की शुरूआत सन् 1923 में मुम्बई में रेडियो क्लब की स्थापना के साथ हुई और आल इंडिया रेडियो की स्थापना 1936 में हुई। बदलते परिवेश समय के साथ इसमें परिपक्वता आई है। रेडियो श्रव्य संचार साधनों के रूप में बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण श्रोता मंडलों की स्थापना से जनता में नवचेतना का प्रादुर्भाव देखा जा रहा है। आकाशवाणी द्वार भारत की सामाजिक , सांस्कृतिक, आर्थिक ऐतिहासिक आदि क्षेत्रों में उन्नति हो रही है। ग्रामीण जीवन के परिवर्तन में रेडियो प्रेरक भूमिका निभा रहा है। आधुनिक युग में विज्ञापन आधुनिकता और दुनियाभर की अच्छी बातों की जानकारी रेडियो द्वारा दी जाती है। रेडियो मनोरंजन, शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी माध्यम है। रेडियो के ज्ञान , मनोरंजन और शिक्षा यह कार्यक्रमों के तीन मुख्य सूत्र हैं। रेडियो के बारे में लेनिन ने कहा

था कि "रेडियो बिना कागज और बिना दूरी का समाचार पत्र है" शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में रेडियो अधिक लोकप्रिय है। पूरे विश्व में वर्तमान समय भी रेडियो सबसे सस्ता, शिक्षा, ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन माना जाता है। ग्रामीण जीवन के निर्माण में जनसंचार का योगदान महत्वपूर्ण है।

दूरदर्शन मनोरंजन, शिक्षा व सूचना प्राप्ति का सबसे प्रभावी जनसंचार साधन है। 15 सितम्बर 1959 को दूरदर्शन का पहला प्रसारण दिल्ली से शुरू किया गया। वर्तमान समय में भारत में 300 से अधिक टेलीविजन चैनलों से कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। देश व ग्रामीण जीवन की अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाने की दिशा में दूरदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान समय में स्वास्थ्य, शिक्षा, ज्ञान एवं समाज में स्वच्छता का वातावरण बनाए रखने के लिए दूरदर्शन के कार्यक्रमों में धार्मिक , पारिवारिक, स्वच्छता व ज्ञान आधारित धारावाहिकों तथा फिल्मों का प्रसारण होना चाहिए , जिससे नैतिक मूल्यों की रक्षा हो और एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो। कुल मिलाकर दूरदर्शन का देश व ग्रामीण जीवन पर अच्छा और बुरा दोनों प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान युग विज्ञापन का युग है। देश की जनता व ग्रामीण क्षेत्रों पर विज्ञापन का बहुत प्रभाव हो रहा है। आधुनिक पूँजीवादी समाज में विज्ञापन का भार पहले से अत्यधिक बढ़ गया है। इस क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन आया है। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का मूल भी विज्ञापन है। सड़कों, गली मुहल्लों, दीवारों, रेडियो, समाचार पत्र तथा टेलीविजन भी विज्ञापन का सशक्त माध्यम है। लोकनृत्य , लोक रंगमंच, लोक संगीत, त्यौहार या त्यौहार आदि कुछ ऐसे परम्परागत साधन है, जिनके द्वारा अपनी बातों को लोगों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। छोटा परिवार सुखी परिवार जैसे विज्ञापन समाज के लोगों को परिवार नियोजन के प्रति सचेत करते है। आजकल इंटरनेट पर भी विज्ञापनों की होड़ सी लगी है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने दुनियां को जोड़कर उसे पास ला दिया है। वर्तमान समय में स्वास्थ्य संबंधी अपीले विज्ञापन के द्वारा प्रसारित किये जाते है। इसलिए विज्ञापन ग्रामीण जीवनस्तर उठाने व आधुनिक सुविधाओं के साथ संबंध स्थापित करने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आज जनसंचार सूचना के युग में विज्ञापन प्रभावी सिद्ध हो रहा है।

देश में सिनेमा के निर्माण और विकास की एक शताब्दी पूरी हो गई है। इनमें भारतीय सिनेमा उसका बाजार व प्रभाव देश में ही केंद्रित नहीं , बल्कि पूरे विश्व सिनेमा में भी अपनी जगह बना ली है। 7 जुलाई 1896 को ल्यूमियर ब्रदर्स ने मुम्बई में 6 लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया। कोकोनट फेयर नामक फिल्म को भारत में 1897 ई. में फिल्माया गया। प्रथम भारतीय फिल्म निर्माता हरिश्चंद्र सखाराम भाटवडेकर थे जिन्होंने 1899 ई. दि रेस्टर्स "मैन एंड मंकी " फिल्म बनाई। राजा हरिश्चंद्र पूर्णतः भारतीय फीचर फिल्म थी। जिसके निर्माता धुंडीराव गोविंद फाल्के थे। सर्वप्रथम बोलने वाली फिल्म आलमआरा का निर्माण अर्दिशिर ईरानि द्वारा किया गया। इस फिल्म का प्रदर्शन 14 मार्च 1932 को मुम्बई के मैजेस्टिक सिनेमा में हुआ। जनसंचार के सबल प्रयास के तौर पर फिल्मों का आविर्भाव चैथे दशक में हुआ। ग्रामीण जीवन व समाज और संस्कृति के अधोपतन को प्रस्तुत कर फिल्मों ने भारतीय लोगों के जीवनस्तर उठाने में योगदान दिया है। सिनेमा को आधुनिक

युग का जादू कहा जाता है , क्योंकि युवाओं पर सर्वाधिक प्रभाव सिनेमा का पड़ता है। सिनेमा के माध्यम से वस्तु स्थिति को समाज के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

प्रिंट मीडिया द्वारा ग्रामीण जीवन व समाज की जनता को जागरूक किया जा रहा है। जनसंचार की वास्तविक शुरूआत देश में प्रिंट मीडिया से ही हुई है। इसकी व्यापक व अत्यधिक भूमिका के कारण इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। आज प्रौद्योगिकी सूचना की वजह से पत्रकारिता क्षेत्रों में परिवर्तन आए है। व्यक्ति के जीवन की सम्पूर्ण झांकी को समाचार पत्र अपने हृदय में समेट लेता है। गांधीजी ने कहा था "पत्रकारिता का उद्देश्य जनसेवा है" वे आगे कहते हैं कि जनता की इच्छाओं विचारों को समझना और उन्हें उजागर करना और सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना इन सभी बातों पर प्रिंट मीडिया का महत्व स्थापित करता है। आज समाचार पत्र सामाजिक दायित्व निभाता है। प्रिंट मीडिया देश व समाज मेगं होने वाले परिवर्तनों की सूचना देता है और समाज का मनोरंजन भी करता है। पत्रकारिता का क्षेत्र वैचारिक और बुद्धिजीवी लोगों का क्षेत्र है। पत्रकारिता को संचार का सामाजिक विज्ञान और लोकसेवा का सशक्त माध्यम कहा जाता है। प्रिंट मीडिया सामाजिक बुराईयों से लोगों को मुक्त करने के लिए संकट निवारण का भी कार्य करता है।

कम्प्यूटर को आधुनिक जनसंचार प्रणाली की आत्मा कहा जाता है। आज कम्प्यूटर द्वारा दूरसंचार, उपग्रह संचार, रेडियो, टीवी, समाचार पत्र, ज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आई है। टेलिफोन, मोबाईल, फैक्स, इंटरनेट प्रणालियों में कम्प्यूटर का उपयोग आज सामान्य बात हो गई है। देश की शहरी व ग्रामीण जनता के ज्ञान निर्माण में कम्प्यूटर इंटरनेट मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज व्यक्ति के जीवन स्तर के विकास के सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर इंटरनेट तकनीक ने अपना प्रभुत्व सिद्ध किया है। जनसंचार में अभूतपूर्व क्रांति लाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो रही है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण जीवन स्तर को ऊँचा उठाना आधुनिक भारत का मुख्य लक्ष्य है। जनसंचार का देश के शहरी व ग्रामीण जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। जनसंचार की व्यवस्था को ओर अधिक व्यवस्थित तरीके से ग्रामीण क्षेत्र के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाया जाये , तो देश का ओर अधिक तीव्रगति से विकास होगा। जनसंचार का स्वरूप, आकार आदि को देखकर प्रतीत होता है, कि देश के प्रत्येक क्षेत्रों में किसी न किसी माध्यम से प्रयोग हो रहा है अर्थात् जनसंचार के माध्यम से देश व ग्रामीण जीवनस्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *दत्त, रूद्र एवं सुन्दरम के.पी.एम. , भारतीय अर्थव्यवस्था' (2009) एस.चन्द एण्ड कंपनी प्रा.लि. नई दिल्ली।*
2. *गुप्ता, स्वामी, ग्रामीण विकास एवं सहकारिता (2012) रमेश बुक डिपो, जयपुर।*
3. *घोष, शंकर, सामान्य अध्ययन (2012) यूनिक पब्लिकेशन, न्यू देहली।*
4. *पाण्डेय, पी.एन., ग्रामीण विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तन (2008) रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर*
5. *शुक्ला, संध्या एवं एस. अखिलेश, भारत में ग्रामीण विकास (2011) गायत्री पब्लिकेशन, रीवा।*
6. *वर्मा, सावलिया बिहारी , ग्रामीण अर्थशास्त्र एवं सहकारिता (2011) विश्वभारती पब्लिकेशन्स नई दिल्ली*